

पाठ 3— अध्याय 2 और 3

पिछले सप्ताह हम गिनती अध्याय 1 को समाप्त कर रहे थे, तभी हमारा समय समाप्त हो गया। और विषय लेवी (लेवियों) का गोत्र था, जिन्हें इस्राएल का पुजारी गोत्र बनने के लिए नियुक्त किया गया था, जिन्हें उनके विशेष पवित्र कार्य के लिए इस्राएल के इस पहले से ही अलग किए गए राष्ट्र से अलग किया जाएगा। फिर भी यह समझना कि लेवी को कैसे अलग किया गया, उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि यह तथ्य कि उन्हें अलग किया गया था।

ऐतिहासिक और धर्मशास्त्रीय दृष्टि से लेवियों को इस्राएल से अलग कर दिया गया था (अब उन्हें इस्राएली नहीं माना जाता), उन्हें परमेश्वर द्वारा इस्राएल से सामूहिक रूप से अलग कर दिया गया था। यह बहुत हद तक पहले के आश्चर्यजनक गोद लेने के पैटर्न से मेल खाता है जिसका अध्ययन हमने उत्पत्ति 48 में किया था।

आइये एक या दो मिनट के लिए इसकी समीक्षा करें।

पढ़िए उत्पत्ति 48:1–6

यहाँ, किसी कारण से जो हमें नहीं बताया गया है, याकूब (जिसे इस्राएल कहा जाता है) यूसुफ के दो बेटों को यूसुफ से अलग करके गोद लेता है (याद रखें कि यूसुफ याकूब का सबसे पसंदीदा बेटा था)। याकूब यूसुफ के दो बेटों, एप्रैम और मनश्शे को अपना बेटा बनाता है। दूसरे शब्दों में, उसके इन 2 पोते-पोतियों की स्थिति बदलकर याकूब के बेटे कर दी जाती है। यह वाकई एक अजीब बात है और हमें इसके अर्थ पर विचार करना है। लेकिन यहाँ गिनती में हम पाते हैं कि यहोवा इस्राएल के साथ ठीक यही करता है: वह इस्राएल से लेवी के पूरे गोत्र को अपनाता है ताकि वे उसके अपने खास सेवक बन सकें।

तो अब इस बात पर गौर करें: एप्रैम और मनश्शे को यूसुफ के गोत्र से निकले हुए कुलों में से होना चाहिए था। इसके बजाय क्योंकि उन्हें गोद लिया गया था, अब वे संभावित कुलों से ऊपर उठकर अपने स्वयं के गोत्रों की स्थिति में आ गए हैं: याकूब (इस्राएल) के 2 गोत्र। दूसरी ओर लेवी को अब इस्राएल के गोत्र के रूप में नहीं गिना जाना चाहिए: बल्कि इसे इस्राएल के गोत्र के रूप में हटा दिया गया है और अब यह ईश्वर का गोत्र है। बाइबिल में यहाँ से आगे जो कुछ भी होता है, उसे समझने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम लेवी के इस्राएल से अलग होने के प्रभाव को पहचानें और समझें।

और यहाँ हमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सिद्धांत मिलता है जो आधुनिक दुनिया के बिल्कुल विपरीत है। एक सिद्धांत जिसे अगर ज्यादातर लोग समझ भी लें, तो उसे सबसे असहिष्णु और अहंकारी स्थिति के रूप में निंदा की जाएगी जो एक व्यक्ति अपना सकता है। और यह है: परमेश्वर अपने सेवकों को बाकी सभी से अलग करता है, उन्हें ऊपर उठाता है, उनसे उच्च अपेक्षाएँ रखता है, और उन्हें विशेष ध्यान देता है। वे अलग हैं। यह यहोवा ही है जो उन्हें अलग दर्जा देता है। यह उनके द्वारा किए गए किसी काम की वजह से नहीं आया है बल्कि इसलिए आया है क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा घोषित किया है। उसके सेवक (लेवी) इतने खास हैं कि उन्हें उसके विशेष अलग राष्ट्र, इस्राएल के बाकी सभी लोगों में गिना भी नहीं जा सकता। यह सब पहले महत्वपूर्ण ईश्वर-सिद्धांत से जुड़ा है जो मैंने आपको बहुत समय पहले सिखाया था; परमेश्वर विभाजित करता है, चुनता है, और अलग करता है।

वह भेद करता है। यह कोई ऐसा ईश्वर नहीं है जो कहता है कि हम सब एक बड़े खुशहाल परिवार हैं। वह ऐसा नहीं करता है। हम सभी को एक समान नहीं समझते तथा हमारी सदैव बदलती हुई अभिमान और प्राथमिकताओं के अनुरूप सहिष्णु या राजनीतिक रूप से सही नहीं हैं।

क्या आप यीशु के सच्चे विश्वासी और शिष्य हैं? तो इतने सालों पहले का वह हिट गाना, "वी आर द वर्ल्ड" आप पर बिल्कुल भी लागू नहीं होता। आप, यीशु के लहू के द्वारा, अन्य सभी मनुष्यों से अलग हो गए हैं। प्रभु ने आपको ऊँचा दर्जा और अनुग्रह दिया है। आप लेवीयों के आधुनिक आध्यात्मिक समकक्ष हैं (नहीं, आप शारीरिक लेवीय नहीं बन गए हैं)। आपने इस अनुग्रह को पाने के लिए क्या किया? कुछ भी नहीं। आपने बस यीशु मसीह ने आपके लिए जो कुछ किया, उसकी वास्तविकता को स्वीकार किया।

इसलिए, मेरे भाइयों, आपको इस ग्रह पर दूसरों की तरह नहीं गिना जाना चाहिए। आपको इस ग्रह पर दूसरों की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए। वास्तव में आपको पृथ्वी पर परमेश्वर की पवित्रता के संरक्षक के रूप में कर्तव्य सौंपा गया है। क्योंकि आप परमेश्वर के सांसारिक निवास हैं, और उनकी पवित्रता का कुछ रहस्यमय तत्व जिसे हम पवित्र आत्मा, रू-आख हाकोदेश कहते हैं, वास्तव में आपके अंदर रहता है। आप जहाँ भी हैं, वह वहाँ है। आप जो कुछ भी अनुभव करते हैं, आप उसे उसके अधीन करते हैं और उसके अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं। इसलिए परमेश्वर के सेवक के रूप में आपको स्वेच्छा से किसी ऐसे व्यक्ति या चीज़ से जुड़ना नहीं चाहिए जो परमेश्वर के लिए अलग नहीं है। और आपको किसी ऐसे व्यक्ति या चीज़ को अपने साथ जुड़ने की अनुमति नहीं देनी चाहिए जो यहोवा के लिए अलग नहीं है, अगर आपका इस मामले पर कोई नियंत्रण है।

लेवियों को पवित्रता के लिए अलग रखा गया था और अब आपको भी पवित्रता के लिए अलग रखा गया है। बस, खत्म। यही सौदा है और अगर आप इस भूमिका और कर्तव्य को स्वीकार नहीं करते हैं तो आपका एकमात्र वास्तविक विकल्प यीशु के प्रति अपनी निष्ठा को त्यागना है। अब जैसे लेवियों ने इस्राएलियों से अलग होकर जीवन नहीं जिया, वैसे ही हमें भी दुनिया से अलग नहीं रहना है। फिर भी लेवियों को इस्राएल के अन्य गोत्रों के बीच अपने शहर दिए गए ताकि वे इस्राएल की देखभाल करने और इस्राएल को परमेश्वर के साथ उचित संबंध में रखने में मदद करने के लिए अपने दिव्य कार्य को पूरा कर सकें। वास्तव में लेवियों ने न केवल आवश्यक बलिदान और अन्य अनुष्ठानों के माध्यम से तम्बू में सीधे परमेश्वर की सेवा की, बल्कि उन्होंने इस्राएल की सेवा करके अप्रत्यक्ष रूप से भी उनकी सेवा की।

विश्वासियों के रूप में हमें सीधे परमेश्वर की सेवा करनी है। लेकिन जैसा कि यीशु ने कहा, हमें अप्रत्यक्ष रूप से भी उनकी सेवा करनी है। और, हम ऐसा कैसे करते हैं? **मत्ती 25:37** "तब धर्मी लोग उसे उत्तर देंगे, 'हे प्रभु, हमने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया, या प्यासा देखा और पिलाया? 38 'और हमने तुझे कब परदेशी देखा और अपने घर में बुलाया, या नंगा देखा और कपड़े पहनाए? 39 'और हमने तुझे कब बीमार या बन्दीगृह में देखा और तेरे पास आए?' 40 "और राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कुछ तुमने मेरे इन भाइयों में से किसी एक के साथ, चाहे वह उन में से छोटे से छोटा क्यों न हो, किया, वह मेरे ही साथ किया।'

हम उसकी सेवा करते हैं, दूसरों की सेवा करके (खासकर हमारे विश्वास के भाई बहनों की) उसके निर्देश पर। लेवियों और हम यीशु के शिष्यों के बीच समानताएँ, चाहे यहूदी हों या गैर यहूदी, इतनी गहन और दूरगामी हैं कि हम उन्हें अनदेखा नहीं कर सकते और फिर परमेश्वर के राज्य में सदस्यता के वास्तविक ज्ञान का दावा नहीं कर सकते। इसलिए जब हम तोरह का अध्ययन जारी रखते हैं तो इस बात पर बहुत ध्यान दें कि परमेश्वर ने लेवियों से क्या अपेक्षा की थी, इसके अधिकांश सिद्धांत आप पर लागू होते हैं।

मैं इस समय विस्तार में नहीं जाऊँगा, लेकिन मैं आपको इसका एक कारण अवश्य बताऊँगा कि यहोवा ने लेवियों को इस पृथ्वी पर बाकी सब से अलग करके उन्हें अपना क्यों बना लिया इसका संबंध इस सिद्धांत के साथ कि सभी ज्येष्ठ बच्चे स्वतः ही उसके हैं। परमेश्वर ने निर्गमन में एक सिद्धांत स्थापित किया था कि सभी ज्येष्ठों का जीवन उसका था। जब उसने मिस्र में सभी

लोगों और पशुओं का जीवन लिया तो उसने केवल ज्येष्ठों को मारा; वह केवल वही ले रहा था जो पहले से ही उसका ज्येष्ठ था।

लेकिन अब लेवियों को उनके जैविक पिता याकूब से दूर ले जाने के बाद, प्रभु इस्राएल के सभी अन्य गोत्रों के सभी पहलौठों के लिए लेवियों को छुड़ौती के रूप में प्रतिस्थापित कर रहा है। परमेश्वर ने इस्राएल के सभी पहलौठों के जीवन का स्वामित्व लेने के बजाय, उन्हें लेवियों के लिए बदल दिया है। फिलहाल इसे स्वीकार कर लीजिए, भले ही मैंने इसे पूरी तरह से नहीं समझाया है, और अगले कुछ सप्ताहों में हम इस सिद्धांत को और अधिक गहराई से समझेंगे।

मैं इस विचार को लेवियों और विश्वासियों के बीच एक और समानता के साथ समाप्त करना चाहता हूँ। लेवियों को परमेश्वर की पवित्रता को अतिक्रमणकारियों से बचाना था, क्योंकि अगर कोई अनाधिकृत व्यक्ति (जिसे परमेश्वर अयोग्य समझता है) परमेश्वर की पवित्रता पर अतिक्रमण करता है, तो पूरा समुदाय उसके क्रोध को महसूस करेगा। और अयोग्य किसे माना जाता था? वे सभी जिन्हें परमेश्वर ने पवित्र नहीं माना।

लेवियों ने परमेश्वर की पवित्रता की रक्षा करते हुए उसी समय इस्राएल के आम लोगों को परमेश्वर के क्रोध से बचाया, क्योंकि उन्होंने उन लोगों को परमेश्वर से दूर रखा जो पर्याप्त रूप से पवित्र नहीं थे। यदि अपवित्र लोग परमेश्वर की पवित्रता के निकट पहुँच पाते, तो उनका क्रोध पूरे समुदाय पर दैवीय प्रतिशोध के रूप में पड़ता। इसी तरह विश्वासियों का एक उद्देश्य अपवित्र लोगों पर परमेश्वर के क्रोध को विलंबित करना है, अर्थात् संसार। वह दिन आएगा जब **सभी** विश्वासियों को इस धरती से एक ऐसी घटना में दूर ले जाया जाएगा जिसे इंजीलवादी रैचर कहते हैं, और तब परमेश्वर का क्रोध इस ग्रह पर बरसेगा। परमेश्वर के चलते-फिरते, बात करते, जीवित, साँस लेते हुए निवास के रूप में आपके उद्देश्य का एक प्रमुख हिस्सा परमेश्वर की पवित्रता को संसार की अशुद्धता और अपवित्रता से बचाकर इस संसार को परमेश्वर के क्रोध से बचाना है। जब तक हम यहाँ हैं, वह यहाँ है। जब हम चले जाएँगे, तो वह चला जाएगा। अब अगर यह जिम्मेदारी आपके घुटनों को नहीं हिलाती और आपका मुँह सूखता नहीं है, तो या तो आप मुझ पर विश्वास नहीं करते या फिर आप इसे नहीं समझते। इस्राएल और परमेश्वर के पूर्ण विनाश के बीच जो खड़ा था, वह लेवीय थे। आज दुनिया और परमेश्वर के पूर्ण विनाश के बीच जो खड़ा है, वह आप हैं।

मैं इसे जल्दी से छोड़ना नहीं चाहता। मैं आपको कुछ समझाना चाहता हूँ: लेवी शांतिवादी भिक्षुओं की तरह नहीं थे जो अतिक्रमण करने वाले से पीछे रहने की विनती करते थे और फिर

अगर अतिक्रमण करने वाला उनकी बात नहीं मानता तो लेवी गांधी या मूक बलि के बकरे की तरह व्यवहार करते थे। लेवी सशस्त्र और खतरनाक थे जो कोई भी पवित्र भूमि के बहुत करीब अतिक्रमण करता था, वे उसे तुरंत मार देते थे। यह न्याय के बारे में नहीं था जैसा कि हम सोचते हैं। सहानुभूति अप्रासंगिक थी। एक साधारण गलती भी उतनी ही जल्दी मौत लाती थी जितनी कि जिद्दी दृढ़ संकल्प और दुर्भावनापूर्ण इरादे। उत्पत्ति में ज्वलंत तलवार के साथ करुबों की शब्द तस्वीर याद है जो अदन की वाटिका के रास्ते की रक्षा करते थे? और यह कि कोई भी अनधिकृत व्यक्ति जो बहुत करीब जाने की मूर्खता करता था, उसे तुरंत उन करुबों द्वारा नष्ट कर दिया जाता था? लेवियों को उन करुबों के जैसा व्यवहार करना था। लेवियों ने अतिचारी को मारने की अनुमति नहीं माँगी, उनसे बिना किसी हिचकिचाहट के ऐसा करने की अपेक्षा की गई थी, वे किसी अतिक्रमणकारी को गिरफ्तार करके उसे सुनवाई के लिए पुजारी के पास नहीं ले जाते, लेवी को उस व्यक्ति को मौके पर ही मार डालना पड़ता था या ऐसा न करने पर अपनी जान गंवानी पड़ती थी। परमेश्वर की पवित्रता एक गंभीर मामला है। परमेश्वर वास्तव में मानव जीवन को बहुत महत्व देता है, लेकिन वह अपनी पवित्रता को भी सर्वोच्च महत्व देता है, और शास्त्र यह स्पष्ट करते हैं कि वह अपनी पवित्रता बनाए रखने के लिए सभी मानव जीवन का बलिदान कर देगा।

विश्वासियों के रूप में हमें अपना काम करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे लेवियों ने किया था और यह उपासक और मूर्तिपूजक दोनों के लाभ के लिए था। लेकिन यह काम किनारे पर बैठकर नहीं किया जा सकता। अब जाहिर है कि हम अपवित्र लोगों को मारने के व्यवसाय में नहीं हैं। लेकिन परमेश्वर की पवित्रता के संरक्षक के रूप में हमें सक्रिय और सतर्क रहना चाहिए और सच्चे दुश्मन, शैतान पर, जब भी वह निकट आए, प्रहार करना चाहिए। और हम परमेश्वर के वचन पर खड़े होकर और चाहे कोई भी कीमत क्यों न हो, उसका अनुसरण करके ऐसा करते हैं। यह हमारी ओर से कभी भी तुच्छ या जल्दबाजी में किया गया कार्य नहीं होना चाहिए, न ही ऐसा कुछ जिसे हम बिना अधिक प्रार्थना और परामर्श के करते हैं।

आइये गिनती अध्याय 2 पर चलते हैं।

गिनती 2 सभी पढ़ें

आने वाले पवित्र युद्ध के लिए इस्राएल राष्ट्र का संगठन जारी है। और इस्राएलियों को निर्देश दिए गए हैं कि उन्हें कैसे शिविर लगाना है और जब वे आराम कर रहे हों तो कैसे तैनात होना है। आइए याद रखें कि जंगल में इस्राएली अक्सर इधर-उधर नहीं जाते थे। वे कई महीनों (कुछ मामलों में सालों) तक एक ही स्थान पर रहते थे, उसके बाद आग के बादल के शेकिनाह

द्वारा उन्हें फिर से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता था। इसलिए जब उन्होंने शिविर लगाया तो यह मनोरंजन के लिए टेंट कैंपिंग के लिए सप्ताहांत के लिए नहीं था। किसी तरह की अव्यवस्थित गड़बड़ी के बजाय व्यवस्था होना जरूरी था। और 2-3 मिलियन लोगों की कथित विशालता का मतलब था कि संगठन और संरचना को और भी अधिक सटीक और संहिताबद्ध होना चाहिए था, अगर ये कुछ लोग होते। आश्चर्य की बात नहीं है कि इस्राएलियों के लिए काफी कठोर पदानुक्रम निर्धारित किया गया है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें पवित्र अभयारण्य के चारों ओर अपना विशाल तम्बू गाँव स्थापित करना है। एक प्रकार का वर्गाकार गठन स्थापित किया जाएगा जिसमें 3 गोत्रों वाले प्रत्येक विभाग को एक विशेष स्थान दिया जाएगा। और उस स्थान को पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशा में कम्पास द्वारा निर्दिष्ट किया जाएगा।

वर्गाकार क्यों? बीच में जंगल का तंबू क्यों? वैसे स्पष्ट कारणों के बावजूद कि तंबू के आसपास के लोगों के माध्यम से यह बेहतर संरक्षित था, हम यह भी पाते हैं कि ऐतिहासिक रूप से रामेसेस द्वितीय ने अपने युद्ध अभियानों के दौरान इसी संरचना का उपयोग किया था। फिरौन का शाही तंबू सुरक्षित मध्य में रखा गया था और तंबू के चारों ओर एक तरह के क्रम में कुछ बटालियनों को नियुक्त किया गया था। मिस्र में पीढ़ियाँ बिताने वाले ये इस्राएली इस पद्धति से पूरी तरह परिचित थे।

मैं यह बात सिर्फ इसलिए कह रहा हूँ कि, आम तौर पर, परमेश्वर हमारे साथ उन तरीकों और तरीकों से पेश आता है जिनसे हम अपनी संस्कृति में परिचित हैं। परमेश्वर ने इस्राएल को जो ज़्यादातर रस्में दीं, और जिस रूप में कानून और अध्यादेश पेश किए गए (यहाँ तक कि मेनोराह, होमबलि, धूपबत्ती और खतना इत्यादि का इस्तेमाल) उनमें से कुछ समानताएँ मध्य पूर्वी समाजों में पहले से ही मौजूद थीं। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यहोवा ने इस्राएलियों को ऐसी चीजों और तरीकों के बारे में लगातार निर्देश देना जारी रखा, जो उनके लिए पूरी तरह से विदेशी और दुनिया के लिए बिल्कुल नए थे! नहीं। इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। सदियों से नागरिक रीति-रिवाज विकसित हो रहे थे और परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों के लिए उनमें से कई अपूर्ण रीति-रिवाजों का इस्तेमाल किया। इस्राएल के लिए उसने कुछ रीति-रिवाजों को बदला, कुछ को गैरकानूनी घोषित किया और कुछ को उसने बहुत ही अलग अर्थ दिया।

मुद्दा यह है कि इस्राएल ने जो कुछ भी किया, वह उन्होंने इसलिए किया क्योंकि यह बात उन्हें पहले से ही अच्छी तरह मालूम थी। ऐसा कहा जाता है कि सदियों से परमेश्वर के मार्गों का

अनुसरण करने और उनके लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को बेहतर ढंग से समझने के बाद, इस्राएल के रीति-रिवाज़ अन्य लोगों से बहुत अलग दिखने लगे। उनके तरीके बाकी दुनिया के लिए अजीब और अजीब होते गए और वास्तव में ऐसा लगता है कि यह उनके लोगों के लिए परमेश्वर की योजना है।

हम यीशु के शिष्यों को भी उसी तरह काम करना है। जब हम छुड़ाए जाते हैं (बचाए जाते हैं) तो हम अभी भी घरों में रहते हैं। हम सुबह उठते हैं और नौकरी पर जाते हैं। हम जूते पहनते हैं और कपड़े पहनते हैं। हम कार चलाते हैं। हम अभी भी समाचार पत्र पढ़ते हैं। गति सीमा वही रहती है, हमें अभी भी अपने करों का भुगतान करना होता है, हम वोट देते हैं और बिजली का उपयोग करना जारी रखते हैं। हम चाकू और काँटे से खाते हैं और किताबें पढ़ते हैं। बाहरी रूप से हम उस वातावरण और संस्कृति के अंदर बचाए गए थे जिससे हम परिचित थे। और आमतौर पर हम यहोवा के साथ अपनी राज्य यात्रा उस संस्कृति के अंदर करेंगे जिससे हम उसके अधीन होने से पहले परिचित थे। और परमेश्वर भी हमें उसी समाज के अंदर अपना आदेश पूरा करने के लिए भेजेगा जिसे हम छुड़ाए जाने से पहले जानते थे। जब हम पहली बार छुड़ाए जाते हैं तो आमतौर पर सारा बदलाव आंतरिक होता है। यह समय के साथ होता है (अगर यह मेरे जीवन की तरह है, लंबे समय तक) कि आंतरिक परिवर्तन बाहरी रूप से दिखाई देने लगते हैं। इसलिए अंततः हम दुनिया को बहुत अजीब लगने लगते हैं, और दुनिया हमें और भी अजीब लगती है। या फिर हम दुनिया के सामने उनकी उम्मीदों और आकांक्षाओं के लिए खतरा बनने लगते हैं, क्योंकि हम सिर्फ अप्रिय से दुश्मन बनने की ओर बढ़ रहे हैं। यह उस समय इस्राएल के लिए ऐसा ही था और (अगर आप इसे नहीं पहचानते हैं) तो यह अब हमारे लिए भी ऐसा ही है।

पद 2 स्पष्ट रूप से बताता है कि 12 जनजातियों को बैठक के तम्बू के चारों ओर एक दूरी पर डेरा डालना है। बहुत पास होना बहुत खतरनाक है। और उस दिन के आम वाक्यांशों का उपयोग करते हुए यह आगे कहता है कि प्रत्येक इस्राएली को **अपनी इकाई** के साथ डेरा डालना है (अर्थात्, अपने युद्ध समूह के भीतर) कि बुरी तरह से अनुवादित "अपने **मानक** के साथ जैसा कि हम आमतौर पर लिखा हुआ देखते हैं। इसलिए प्रत्येक इस्राएली को जनगणना द्वारा निर्धारित युद्ध इकाई के साथ डेरा डालना है, और अपनी इकाई के ऊपर अपनी इकाई का प्रतिनिधित्व करने वाला एक बैनर फहराना है। अब यह बैनर किसी तरह का रंगीन कपड़ा था जिस पर समूह का प्रतीक चिन्ह अंकित था। अधिकांश तार्गम और तल्मूड इस बात से सहमत हैं कि 12 जनजातियों में से प्रत्येक के पास एक विशिष्ट बैनर था जिसमें एक विशिष्ट रंग शामिल था और प्रत्येक बैनर का रंग 12 अर्ध-कीमती पत्थरों में से एक के साथ मेल खाता था जो उच्च पुजारी की छाती की

प्लेट को सुशोभित करते थे। बस यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि प्रत्येक बैरन पर क्या प्रतीक चिन्ह था; ऐसा कुछ भी संरक्षित नहीं किया गया है जो हमें किसी भी निश्चितता के साथ बताता हो। अतः आप पुस्तक में इस्राएल के प्रत्येक कबीले के लिए जो भी प्रतीक देखते हैं, वे केवल अनुमान और परंपरा मात्र हैं।

जनजातियों का क्रम (या, अधिक शाब्दिक रूप से जैसा कि उन्हें यहाँ कहा जाता है, सेना) यह है कि यहूदा, इस्साकार और जबूलून एक इकाई के रूप में जंगल के तम्बू के पूर्वी भाग (सामने) पर एक साथ डेरा डालते हैं। यह सम्मान की प्रमुख स्थिति है। यहूदा इस 3-गोत्र विभाजन का नेता है। यहूदा को नेतृत्व का यह अधिकार इसलिए प्राप्त हुआ क्योंकि यहूदा ने रूबेन (जो याकूब (इस्राएल) का स्वाभाविक जेठा था) का स्थान ले लिया था, क्योंकि रूबेन ने याकूब के विरुद्ध अविवेकपूर्ण कार्य किया था।

रूबेन, हालाँकि अब वह इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्र और इसलिए सर्वोच्च नेता के रूप में प्रमुख स्थान नहीं रखता है, फिर भी वह एक नेता है और जाहिर तौर पर यहूदा के बाद दूसरे स्थान पर है। और इसलिए उसे तम्बू के दक्षिण की ओर अगले सबसे प्रतिष्ठित क्षेत्र में डेरा डालने का निर्देश दिया जाता है। मैं यहाँ यह कहना चाहूँगा कि जब मैं किसी गोत्र को नाम से पुकारता हूँ और "वह" कहता हूँ तो इसका मतलब यह नहीं है कि रूबेन उदाहरण के लिए अभी भी जीवित था। वह बहुत पहले मर चुका था और जैसा कि हमने जनगणना के रिकॉर्ड में देखा था, एलीजूर नाम का एक व्यक्ति था जो वर्तमान में रूबेन गोत्र का मुखिया था। इस समय तक याकूब के मूल पुत्रों में से केवल एक ही चीज़ बची थी, वह थी उनका वंशज और उनके नाम जो उनके द्वारा उत्पन्न जनजातियों के नाम के रूप में आगे बढ़े।

इस प्रकार यहूदा के गोत्र का नेता सर्वोच्च पद पर था, जबकि रूबेन के गोत्र का नेता दूसरा सर्वोच्च पद पर था।

रूबेन ने शिमोन और गाद के साथ डेरा डाला और उन तीनों ने मिलकर दक्षिणी दल बनाया।

इसके बाद, पश्चिम की ओर एप्रैम अपने दल का प्रधान था, और उसने मनश्शे और बिन्यामीन के साथ डेरा डाला।

अंत में, सबसे कम प्रतिष्ठित स्थान पर उत्तर का वह डिवीजन था जिसका नेतृत्व दान कर रहा था। उसके साथ अशर और नफताली थे।

अब ये शिविर स्थल (कम्पास दिशा के अनुसार व्यवस्थित) मार्चिंग क्रम को भी निर्धारित करते हैं; यानी कौन आगे मार्च करेगा, कौन उसके बाद आएगा और इसी तरह से यह क्रम आगे बढ़ता है कि कौन पीछे आएगा। यहूदा का दल स्तंभ का नेतृत्व करेगा जिसके बाद रूबेन होगा। फिर पद 17 हमें बताता है कि रूबेन के दल के बाद, लेकिन अगले दल (जो एप्रैम था) से पहले, जंगल के तम्बू को ले जाया जाना था। दूसरे शब्दों में, सभी महत्वपूर्ण तम्बू मंदिर को ले जाने और उसकी रक्षा करने वाले लेवियों को मार्चिंग स्तंभ के ठीक बीच में होना था। पीछे की ओर दान का दल था।

अब क्या हम यह पता लगा सकते हैं कि क्यों कुछ जनजातियों को एक विशेष समूह, एक प्रभाग में एक साथ शिविर लगाने के लिए नियुक्त किया गया था? हाँ, इसके पीछे कुछ तर्क और पैटर्न हैं। पूर्व की ओर से बने थे जिसे लिया जनजाति कहा जाता है। यह यहूदा और अन्य दो जनजातियों की जैविक माँ है उसने लिया के साथ डेरा डाला। दक्षिण में हमें लिया की 3 और जनजातियाँ मिलती हैं, हालाँकि थोड़ा अंतर है। दक्षिणी प्रभाग का नेता रूबेन लिया का जैविक पुत्र था जैसा कि लिया शिमोन था। लेकिन गाद लिया का जैविक पुत्र नहीं था, बल्कि वह लिया की दासी जिल्पा का पुत्र था। हालाँकि कानून के अनुसार एक नौकर के रूप में जिल्पा, लिया की सरोगेट माँ थी इसलिए गाद को लिया के बेटों में गिना जाता था।

पश्चिम में एप्रैम के नेतृत्व में राहेल जनजातियाँ थीं; यानी ये सभी याकूब की सबसे प्रिय पत्नी राहेल से उत्पन्न पुत्र थे। अब फिर से मुझे कुछ स्पष्टीकरण देना है क्योंकि हालाँकि बेंजामिन की जैविक माँ वास्तव में राहेल थी, एप्रैम और मनश्शे, इस विभाजन को बनाने वाले अन्य दो जनजाति की जैविक माँ राहेल नहीं थी। तो उन्हें राहेल जनजाति क्यों कहा जाता है? क्योंकि राहेल यूसुफ की जैविक माँ थी, जो एप्रैम और मनश्शे का जैविक पिता था; और यूसुफ के पुत्रों के रूप में वे वर्तमान में यूसुक के अधिकार को धारण कर रहे थे, कुछ ऐसा जो उत्पत्ति 48 के उस अद्भुत क्रॉस हँडेड आशीर्वाद द्वारा निर्धारित किया गया था। वैसे हम इसे जैविक रूप से बोलते हुए सोचेंगे, एप्रैम और मनश्शे राहेल के पोते थे। फिर भी उस युग के रीति-रिवाजों के कारण बेंजामिन को राहेल का पुत्र माना जाता था और क्रॉस-हँडेड आशीर्वाद में याकूब (राहेल के पति) ने एप्रैम और मनश्शे को गोद लिया था।

उत्तर की ओर (जो जनजातीय क्रम में सबसे निचले स्थान का प्रतिनिधित्व करता है) शेष 3 जनजातियाँ थीं, जिनका नेतृत्व दान करता था। उन्हें सबसे निचला इसलिए माना जाता था

क्योंकि वे सभी याकूब की रखैलों (लीआ और राहेल की दासियाँ) के बेटे थे। दान और नप्ताली बिल्हा के बेटे थे, और आशेर ज़िल्पा का बेटा था।

इस सब में यह देखना महत्वपूर्ण है कि यहूदा प्रमुख गोत्र है और इसलिए उसका दर्जा सबसे ऊँचा है, और दान सबसे कम है। और यह कि हम चाहे जो भी देखें, जनजातिवाद अपने पद और शक्ति के निर्धारण में क्रूर था और यह निरपेक्ष था और यह इस्राएल के साथ भी अलग नहीं था। निम्न श्रेणी के गोत्र के लिए एकमात्र उम्मीद यह थी कि वह किसी तरह उच्च श्रेणी के गोत्र से ज़्यादा शक्तिशाली बन जाए और या तो उस उच्च गोत्र को अपने में समाहित कर ले या फिर उस पर हावी हो जाए। पुराने नियम में इस्राएल की प्रगति और विकास को देखते समय इसे ध्यान में रखें क्योंकि यही वह संदर्भ था जिसके द्वारा सत्ता का उतार-चढ़ाव निर्धारित होता था। वास्तव में आज भी आदिवासी समाज इसी तरह काम करते हैं।

एक और जानकारी जो मुझे लगता है कि आपको बाइबिल को समझने में मददगार लगेगी: पूर्व दिशा प्रमुख थी, ठीक उसी तरह जैसे "दाहिनी ओर" प्रमुख दिशा थी। इसलिए यह समझने के लिए कि विभिन्न डिवीजनों ने जिस दिशा में डेरा डाला था, वह रैंक को क्यों दर्शाती थी, हम पूर्व से शुरू करते हैं।

खुद को खड़े होकर पूर्व की ओर मुख करके कल्पना करें। यदि आप अपना दाहिना हाथ दाईं ओर फैलाते हैं तो आप किस दिशा में इशारा कर रहे होंगे? दक्षिण। इसलिए चूँकि पूर्व रैंक #1 है, इसलिए पूर्व के ठीक दाईं ओर रैंक #2 है, दक्षिण। अब मुड़ें और दक्षिण की ओर मुख करें। अपना दाहिना हाथ अपनी दाईं ओर फैलाएँ और अब आप किस ओर इशारा कर रहे हैं? पश्चिम। इसलिए वह रैंक #3 है। दाईं ओर एक और मोड़ और हम उत्तर की ओर मुख कर रहे हैं, जो कि अंतिम रैंक है, रैंक #4।

इसी प्रोटोकॉल का इस्तेमाल पूरे बाइबिल में किया गया है। इसलिए हमेशा पूर्व से शुरू करें और कम्पास दिशाओं के क्रम और क्रम को समझने के लिए दाईं ओर बढ़ें, क्योंकि इनमें से प्रत्येक दिशा शक्ति और अधिकार के क्रम और क्रम का भी प्रतीक है।

आइये गिनती अध्याय 3 पर चलते हैं।

यह अध्याय लेवी गोत्र की जनगणना के इर्द-गिर्द घूमता है। और, यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह सब जहाँ हुआ वह माउंट सिनाई है, जो पद 13 तक है, लेकिन फिर पद 14 से शुरू

होकर माउंट सिनाई से सामान लादकर निकलने के बाद उनके जंगल की यात्रा के दौरान का समय बदल जाता है। आइए गिनती अध्याय 3 पढ़ें।

गिनती अध्याय 3 पूरा पढ़ें

बाइबिल के अनुसार वंशावली हमेशा महत्वपूर्ण होती है। और इसलिए अध्याय 3 की पहली आयतें मूसा और हारून (लेकिन मुख्य रूप से हारून) की वंशावली के बारे में विस्तार से बताती हैं। वास्तव में इस तथ्य के अलावा कि मूसा हारून का भाई है। यहाँ पोस्ट की गई कोई भी वंशावली सीधे मूसा पर लागू नहीं होती है।

मैं एक सिद्धांत को फिर से दोहराना चाहता हूँ जो थोड़ा भ्रमित करने वाला हो सकता है लेकिन इस्राएल के सामाजिक ढाँचे को समझने के लिए यह आवश्यक है इसलिए इसे दोहराना उचित है; हारून और उसका परिवार लेवी के गोत्र को बनाने वाले कई प्रमुख कुलों में से एक था। हालाँकि कई लेवी कुल थे, यहोवा ने हारून के कुल को एक पवित्र दर्जा दिया जो लेवी के गोत्र के अन्य सदस्यों से एक पायदान ऊपर था। विशेष रूप से केवल हारून के कुल के सदस्य ही इस्राएल के वास्तविक पुजारी हो सकते थे। अन्य सभी लेवी पुजारियों के सेवक और सहायक होने के लिए थे, या शायद अधिक सटीक रूप से, पुजारी के सेवक। पुजारी ही एकमात्र ऐसे लोग थे जो अनुष्ठान और समारोह आयोजित कर सकते थे। अन्य लेवी परिवारों के अलग-अलग कर्तव्य थे, जैसे कि तम्बू की रखवाली करना और उसे इधर-उधर ले जाना, पानी के बर्तन भरना, सफाई करना, आग जलाना, संगीत बजाना, भजन गाना आदि।

अतः कुछ-कुछ उसी प्रकार जैसे लेवियों को इस्राएल के नियमित परिवार (अन्य सभी गोत्रों) से परमेश्वर की सेवा के लिए अलग कर दिया गया था, हारून के परिवार को भी लेवी के नियमित परिवार से अलग कर दिया गया तथा परमेश्वर की सबसे विशेष सेवा के लिए उसे उच्च दर्जा दिया गया।

जहाँ तक महायाजक का सवाल है (और एक समय में केवल एक ही महायाजक होता था) उसे हारून के एक विशेष पुत्र, एलीआजर से ही आना था। इसलिए लेवी के गोत्र को तम्बू सेवा के लिए इस्राएल से हटा दिया गया; हारून के परिवार को पुरोहिती सेवा के लिए लेवियों से हटा दिया गया; और हारून के परिवार से एक विशेष पुत्र को महायाजकों की निरंतर श्रृंखला प्रदान करनी थी। विभाजन, पृथक्करण और चुनाव।

पद 2 में हमें हारून के पुत्रों के नाम मिलते हैं तथा उनमें से दो के भाग्य का दुःखद स्मरण मिलता है। चार बेटे हैं नादाब, अबीहू, एलीआजर और इतामार। नादाब हारून का पहला बेटा था। सामान्य परिस्थितियों में, वह अपने पिता हारून की मृत्यु के बाद अगला महायाजक होता; और फिर नादाब वह वंश उत्पन्न करता जिससे भविष्य के सभी महायाजक आते। लेकिन यहोवा ने नादाब और उसके भाई अबीहू को सीधे प्रतिशोध में मार डाला क्योंकि उन्होंने प्रभु को “अजीब या “विदेशी” आग चढ़ाई थी। इसका मतलब है कि वे अपने पुजारी कर्तव्यों का पालन कर रहे थे लेकिन कुछ अनुष्ठान प्रक्रियाओं के बारे में सीधे निर्देशों को अनदेखा कर रहे थे और इसलिए प्रभु ने उन्हें आग की लपटों में घेर लिया और उनके पिता हारून की आँखों के सामने ही उन्हें जला दिया। चूँकि हारून का पहला बेटा नादाब मर चुका था और दूसरा बेटा अबीहू भी मर चुका था, इसलिए भविष्य के महायाजकों के पिता बनने की अगली पंक्ति में एलीआजर का नाम आया।

इसके अलावा यह भी स्पष्ट है कि नदाब और अबीहू की वंशावली उनके साथ ही समाप्त हो गई क्योंकि उनकी मृत्यु के समय उनके कोई पुत्र नहीं था। उनके वंश वृक्ष काट दिए गए और उनकी वंशावली समाप्त हो गई।

अब अगले कुछ पद, 5 से शुरू होकर, लेवियों (अर्थात् गैर-पुजारी) के कर्तव्यों को परिभाषित करते हैं। और यदि आप इसे अंग्रेजी में पढ़ते हैं तो यह थोड़ा अस्पष्ट है कि उन्हें वास्तव में क्या करना चाहिए। अधिकांश पाठ कुछ इस तरह कहते हैं कि वे कर्तव्यों का पालन करेंगे तम्बू का काम करेंगे, इस्राएलियों की ओर से एक कर्तव्य, आदि।

वास्तव में, इब्रानी भाषा में कर्तव्यों को काफी स्पष्ट रूप से बताया गया है। पद 7 में जिसे आमतौर पर “कर्तव्यों का पालन करना” के रूप में अनुवादित किया जाता है, वह इब्रानी में शमर मिशमेरेध है। और इसका अर्थ है, “पहरेदारी करना”। इसलिए पद 7 में लिखा होना चाहिए, “वे (लेवीय) उसके और सारी मण्डली के लिए मिलापवाले तम्बू के सामने पहरा देंगे, जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी, लेवियों का एक प्राथमिक कार्य परमेश्वर की पवित्रता और उसके निवास स्थान की रखवाली करना था।

बाद में उसी आयत में जहाँ अधिकांश अनुवाद कहते हैं, “तम्बू का काम करना” (या कुछ ऐसा ही) “काम करने” के लिए इस्तेमाल किया गया इब्रानी शब्द अबाद बोदाह है। और इसका वास्तव में अर्थ है, “भारी काम करना। इसलिए लेवियों को सौंपे गए पहले कर्तव्य हैं शमर मिशमेरेथ, पहरा देना, और फिर अबाद बोदाह, तम्बू का भारी काम करना।

पद 9 और 10 मूलतः यह विचार प्रस्तुत करते हैं कि लेवियों को तम्बू से जुड़े नीले कौलर वाले कार्यों को करने के लिए समर्पित किया गया है। और उन्हें याजकों के निर्देशों का पालन करना है।

पद 11 में एक आकर्षक दिव्य निर्देश की शुरुआत होती है जो ईसाई धर्म और यहूदी धर्म दोनों में लगभग लुप्त हो चुका है। यह एक निर्देश है जो मैंने आपको पिछले सप्ताह बताया था और आपसे कहा था कि हम इसे बाद में थोड़ा और विस्तार से बताएँगे तो हम यहाँ हैं। और यह निर्देश पद 11-13 में आता है; यह है कि लेवियों को इस्राएल के अन्य गोत्रों के ज्येष्ठ पुत्रों की जगह लेनी है। अर्थात्, जिसके द्वारा परमेश्वर ने किसी विशेष तरीके से इस्राएल के गोत्रों के सभी ज्येष्ठ पुरुषों को विशेष और अपने लिए अलग माना एक प्रकार का स्वामित्व या परमेश्वर द्वारा गोद लेना अब उसने इस्राएल के सभी ज्येष्ठ पुत्रों के स्थान पर कुल मिलाकर लेवियों को अपना बना लिया है। इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्रों को अन्य राष्ट्रों के ज्येष्ठ पुत्रों से ऊपर और ऊपर रखने का वह विशेष दर्जा निर्गमन 11 में आया, जब इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्रों को उनके फसह के उद्धार की याद के रूप में परमेश्वर को याद किया गया।

हम अगले सप्ताह की शुरुआत इस्राएल के ज्येष्ठ पुत्र के स्थान पर लेवी के गोत्र द्वारा प्रतिस्थापित किये जाने के विषय पर चर्चा से करेंगे।